महाशिवरात्रि पर्व महान

महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है यह सर्व महान ।
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् द्वारा, प्राणि मात्र का हो कल्याण ॥
कर्मकाण्ड, औपचारिकता ने, आध्यात्मिक सच का लिया स्थान ।
तब बनते सर्वनाशार्थ अणु बम, संहारक होता विज्ञान ॥
दोहन अति प्रकृति का करके, क्षरण परत होता ओजोन ।
मौसम असम ताप में वृद्धि, प्राकृतिक आपदा, जल-अवसान ॥
होती जाती ग्लानि धर्म की, बढ़ता जाता पापाचार ।
धर्म स्थापन हेतु तभी ही, प्रभु-शिव लेते हैं अवतार ॥
तब शिव-शक्ति से तमस नष्ट कर, शिव हरते हैं अज्ञान ।
महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है यह सर्व महान ॥
नूर, डिवाइन लाइट शिव ही, ज्योति स्वरूप वही ओंकार ।
शिव कल्याण स्वरूप स्वयं है, लिंग रूप प्रतिमा आकार ॥
आशुतोष, विषपायी शिव ही, सब दुर्गुण करते स्वीकार ।
आओ मोह, मद करें समर्पित, स्व मन बनायें शिव आगार ॥
गुण लें अवढरदानी के हम, अवगुण सारे कर दें दान ।
महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है यह सर्व महान ॥
वैर-बेर और घृणा-धतूरा, व्यसन रूप भांग भी चढ़ायें ।
विषय-वासना और पाप के, अक फूल शिव को सौंप के आयें ॥
संयम रख संकल्प करें हम, अवगुण तज सब गुण अपनायें ।
संगम युग में रहें समीप, संग शिव बैठ विचार बनायें ॥
आत्मज्योति को ज्योतित रखें, और न लें नींद अज्ञान ।
महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है ये सर्व महान ॥
दिव्यगुणों को धारण करके, सुख-शान्तिमय हो जीवन ।
कुसंस्कार, आसुरी वृत्ति का, काम-क्रोध का कर अर्पण ॥
अन्यों की न बुराई देखें, स्वदुर्गुण देखें ज्ञान-दर्पण ।
पवित्रता के पुरुषार्थ द्वारा, करें अशुद्धि सब अर्पण ॥
कलियुग फिर सतयुग बन जाये, व्यक्ति-व्यक्ति का हो निर्माण ।
महाशिवरात्रि है अति शुभ रात्रि, पर्व है ये सर्व महान ॥

ओम् शान्ति